8

खिंचाव

तलाश

व्यग्र पाण्डे

समाजसेवी मित्र के साथ एक दिन मुझे वृद्धाश्रम जाना हुआ जैसे ही हमारी कार उस परिसर में जाकर ठहरी, सभी वृद्धाएं एक साथ अपने-अपने कमरों से बाहर आकर, हाथ जोड़कर खड़ी हो गईं। मुझे, ये अच्छा नहीं लगा। मैंने एक वृद्धा के पास जाकर, नमस्कार करके कहा-माँ, हमें हाथ मत जोड़ों! हमसब तो आपके बेटों जैसे हैं। ये सुनकर एक वृद्धा ने कहा-अरे, आप अपने को बेटों जैसा मत कहो, आपसब तो अच्छे इंसान हैं। आप सबने हमें कम से कम आश्रय तो दे रखा है हम सब पर बहुत बड़ा उपकार है आप सभी का। बताओ, बताओ फिर आप हमारे बेटों जैसे कैसे हो सकते हैं?

अचानक उस बूढ़ी अम्मा ने मेरा हाथ पकड़ा और मुझे अपने कमरे में ले गई फिर अपने तख्ते पर बिठाकर, कुछ चावल के फूलें खाने को देने लगी। वह मेरे चेहरे, मेरी आँखों में कुछ ढूँढ़ने का प्रयास कर रही थी पर मैं समझ नहीं पा रहा था। जब हम वापस चलने को हुए तो ना जाने क्यों मेरा मन पीछे मुड़-मुड़कर उसे देखना चाह रहा था और मैं एक खिंचाव-सा अनुभव कर रहा था...

लगभग चालीस वर्ष बाद राधे काका होली पर परिवार सहित मुम्बई से अपने गाँव आये । बदले-बदले गाँव को देख, काका रोमांचित थे उनकी आँखें गाँव के कण-कण को पहचानने का प्रयास कर रही थी । काका, देख कहीं रहे थे, चल कहीं रहे थे । तभी अचानक एक पुराने घर के अहाते से फेंका हुआ गंदा पानी काका के कपड़ों पर आकर गिरा, सब कपड़े खराब हो गये । बहु-बेटों को ये अच्छा नहीं लगा, वे भला-बुरा कहने लगे । आवाज सुनकर, एक बूढ़ी घर से बाहर आई और कहने लगी- बूढ़ी हूं , दिखाई नहीं देता, आप लोग मुझे माफ कर दो । बूढ़ी को देख व उसकी आवाज को सुन, भीगे हुए राधे काका बोले- 'क्या तुम साबो भाभी तो नहीं हो !' अरे, मुझे भाभी कहने वाले तुम कौन हो ? बूढ़ी ने कहा । पहचाना नहीं, "तुम्हारे मौहल्ले का सबसे ज्यादा शरारती बदमाश तुम्हारा देबर राधे ।" राधे का नाम सुनकर , बूढ़ी साबो की आँखों में आँसू आ गये और कहने लगी- "लाला मुझे माफ कर देना" नहीं, भाभी नहीं, ये तो मेरे पुराने कर्मो का फल है । मैं , भी तुम्हें होली के दिनों में बहुत सताया करता था मानों वो पुराना हिसाब आज चूकता कर दिया । बूढ़े राधे को साबो भाभी क्या मिली मानो वो पुराने बीते हुए दिन मिल गये जिनकी तलाश में वो मुम्बई से गाँव आये थे...

ISSN:2583-8849